

## डॉ. टेड हिल्डेब्रांट, ओटी इतिहास, साहित्य, और धर्मशास्त्र, व्याख्यान 15

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट अपने पुराने नियम के इतिहास साहित्य और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में हैं। संख्याओं की पुस्तक पर व्याख्यान संख्या 15।

### ए. प्रश्नोत्तरी पूर्वावलोकन [0:00-0:54]

ठीक है, कक्षा शुरू करें, अगले सप्ताह के लिए आप लोग न्यायाधीशों और रूथ की पुस्तक पर काम कर रहे हैं। न्यायाधीश और रूथ एक साथ चलते हैं। लेख होंगे, हम *अपने पिता इब्राहीम के पास वापस आ सकते हैं* और स्मृति छंद हो सकते हैं। तो मोटे तौर पर यह न्यायाधीश, रूथ, लेख, सामान्य दिनचर्या होगी जिससे हम गुजरते हैं। तो इसे नीचे लाएँ और हम न्यायाधीशों और रूथ की पुस्तकों के साथ प्रगति करेंगे जो हमें उसके बाद राजशाही में परिवर्तन के लिए तैयार करेगी।

### बी. अंतरजातीय विवाह और ओटी [0:55-6:03]

तो आज हमें बहुत कुछ करना है क्योंकि हम संख्याओं की किताब पर पहुँचेंगे। आज हम कुछ बहुत ही रोचक और कठिन अवधारणाओं पर चर्चा करने जा रहे हैं तो आइए इसमें शामिल हों। संख्या अध्याय 12: मैं आपको इसे पढ़कर सुनाता हूँ और यह इस अंतरजातीय विवाह के संबंध में है। वैसे, अंतरजातीय डेटिंग, मुझे एहसास है कि अब हमारी संस्कृति में अंतरजातीय बात कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन यह अतीत में कई बार रहा है और प्राचीन इज़राइल के लिए यह अतीत में था।

तो यहाँ हम संख्या 12 में हैं और यह कहता है: "मरियम और हारून मूसा की कूशी पत्नी के कारण उसके विरुद्ध बातें करने लगे। " अब कूशी पत्नी क्या है? कुश की भूमि को आम तौर पर इथियोपिया की भूमि कहा जाता है। इथियोपिया के लोग किस रंग के हैं?—काला। इसलिए मूसा के भाई और बहन मरियम और हारून दोनों उससे बड़े हैं। क्या आपको उसकी बड़ी बहन याद है जब वह बच्चा था और नदी में तैर रहा था? उनकी बड़ी बहन ने उनकी देखभाल की। हारून उसका बड़ा भाई था। इसलिये हारून और मरियम मूसा की कूशी पत्नी के कारण उसके विरुद्ध बातें करने लगे, क्योंकि उस ने एक कूशी से ब्याह किया था। अब कुछ लोग सोचते हैं कि यह इथियोपिया है और मूसा ने पुनर्विवाह किया था। क्या तुम्हें याद है कि बेटे के खतने के बाद उसकी पत्नी ने उससे

दूरी बना ली थी। उनकी पत्नी कथा से गायब हो गई। कुछ लोग सोचते हैं कि वह घर वापस चली गई और मूसा ने किसी और से दोबारा शादी कर ली और यह एक कूशी थी जिससे उसने दोबारा शादी की थी। अन्य लोग सोचते हैं कि यह सिप्पोरा है। दूसरे शब्दों में, मरियम और हारून वास्तव में सिप्पोरा से बहुत अधिक नहीं मिले थे, और इसलिए वे परेशान थे क्योंकि वह एक मिद्यानी थी। जेथ्रो एक मिद्यानी था। वह मिद्यानी थी लेकिन मिद्यानी को कूशी के रूप में रखा जा सकता है। कुशाइट एक बड़ी श्रेणी है मिडियनेट एक आदिवासी नाम की तरह है। तो यह संभव है कि यह जिप्पोराह है। किसी भी मामले में, मैं यह सुझाव देने जा रहा हूँ कि वह गहरे रंग की है। यह यहां मुद्दे का हिस्सा है और इसलिए कुशाइट संभवतः इथियोपिया है। वे कहते हैं, “क्या यहोवा ने केवल मूसा के द्वारा ही बातें की हैं? क्या उन्होंने भी हमारे माध्यम से बात नहीं की?” यह सुनकर यहोवा ने तुरन्त मूसा से कहा, हारून और मरियम तुम तीनों मिलापवाले तम्बू से बाहर निकल आओ। तब वे तीनों बाहर आए, और यहोवा बादल के खम्भे में होकर उतर आया, और तम्बू के द्वार पर खड़ा हुआ, और हारून और मरियम को बुलाया, और वे दोनों आगे बढ़े। उसने उनसे कहा, 'मेरी बातें सुनो।' फिर मुझे देखने दो कि क्या हमें यह मिल गया है। तो मूसा और उसकी कूशी पत्नी के संबंध में अंतरजातीय विवाह के इस विषय पर बाइबल क्या कहती है? इस प्रकार से यह स्थापित होता है। लेकिन फिर भगवान यहां इस चर्चा को उनके भविष्यवाणी कार्य में बदल देते हैं क्योंकि मरियम और हारून मूसा को चुनौती दे रहे हैं।

प्रभु ने कहा, “मेरी बातें सुनो। जब प्रभु का कोई भविष्यद्वक्ता तुम्हारे बीच में होता है, तो मैं अपने आप को दर्शन के द्वारा उस पर प्रकट करता हूँ।” परमेश्वर स्वयं को एक भविष्यवक्ता के सामने कैसे प्रकट करता है? दर्शनों में वह कहता है, “मैं अपने आप को उसके सामने दर्शनों में प्रकट करता हूँ, मैं सपनों में उससे बात करता हूँ।” तो क्या हम भविष्यवक्ताओं को स्वप्न देखते हुए देखेंगे और क्या हम भविष्यवक्ताओं को दर्शन का उपयोग करते हुए देखेंगे। स्वप्न और दर्शन में क्या अंतर है? सपने रात को तब आते हैं जब आप सोते हैं। दर्शन तब होते हैं जब आप जागते हैं और एक दृश्य देखते हैं। ईश्वर भविष्यवक्ताओं के साथ इसी तरह व्यवहार करता है, लेकिन फिर ध्यान दें कि वह यहाँ क्या कहता है: “मैं अपने आप को दर्शनों में उसके सामने प्रकट करता हूँ, मैं स्वप्नों में उससे बात करता हूँ; परन्तु मेरे दास मूसा के विषय में यह बात सच नहीं है। वह मेरे सारे घर में

विश्वासयोग्य है। मैं उनसे आमने-सामने बात करता हूँ।" इसलिए भगवान कहते हैं, " भविष्यद्वक्ताओं के साथ मैं स्वप्न और दर्शन का उपयोग करता हूँ, लेकिन मूसा के साथ हम आमने-सामने होते हैं।" क्या यह मूसा के बारे में बहुत बड़ा बयान है? क्या मूसा बाइबिल में एक अनोखा पैगम्बर है? भगवान उसके पास सिर से सिर, आमने-सामने जाते हैं।

“ मैं उसके साथ आमने-सामने बात करता हूँ, स्पष्ट रूप से और पहेलियों में नहीं। वह भगवान के स्वरूप को देखता है। फिर तुम मेरे दास मूसा के विरुद्ध बोलने से क्यों नहीं डरे?” इसलिए परमेश्वर ने मरियम और हारून को उनके किए के लिए डांटा। अब, इससे यहाँ एक और प्रश्न उठता है और मैं आपको सुझाव देना चाहता हूँ कि यहाँ एक प्रकार का विडम्बनापूर्ण न्याय है। यहाँ कुछ विडम्बना है। "और यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा, और उस ने उनको छोड़ दिया, और जब बादल तम्बू के ऊपर उठा, तब वहाँ मरियम बर्फ के समान कोढ़ी हो कर खड़ी हो गई।" और आप कहते हैं, "हिल्लेब्रांट आप ऐसा क्यों कहते हैं कि यह विडम्बनापूर्ण न्याय है?" इस पर मेरी राय यह है। मरियम मूसा की काली पत्नी से परेशान हो जाती है और भगवान कहते हैं, "मरियम, तुम्हें सफ़ेद पसंद है? तुम्हें सफ़ेद रंग पसंद है? ठीक है, मैं तुम्हें सफ़ेद बनाऊंगा मरियम, मैं तुम्हें असली सफ़ेद बनाऊंगा। वह उसकी त्वचा को "कोढ़युक्त, बर्फ की तरह सफ़ेद" कर देता है। और इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ इस चीज़ पर एक नाटक है। भगवान कहते हैं, "तुम्हें सफ़ेद रंग पसंद है मैं तुम्हें पक्का सफ़ेद बनाऊंगा।" वह कोढ़ी हो जाती है और इसलिए मैं इसे केवल विनोदी व्यंग्य के रूप में लेता हूँ।

हारून पर कोई प्रहार क्यों नहीं किया गया? हारून को यह यहाँ नहीं मिला। कुछ लोग कहते हैं कि वह महिलाओं को क्यों चुनते हैं, क्या यह संभव है कि मरियम मुख्य प्रवक्ता थीं। लेकिन क्या यह भी संभव है कि हारून को कुष्ठ रोग होने में क्या समस्या है? हारून क्या है? वह सिर्फ एक पुजारी नहीं है। हारून महायाजक है। हारून राष्ट्र का महायाजक है। अगर उसे कुष्ठ रोग हो गया तो यह अच्छा नहीं है क्योंकि इसका असर पूरे देश पर पड़ेगा। इसलिए मरियम को कुष्ठ रोग हो जाता है और हारून फंदे से छूट जाता है लेकिन भगवान ने उसे डांटा है। यह अंतरजातीय विवाह के बारे में एक अंश है इसलिए मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि अंतरजातीय विवाह की निंदा करते समय सावधान रहें। हारून और मरियम ने ऐसा किया और इसके बहुत गंभीर परिणाम हुए।

भगवान उनके मामले पर आ गये।

### सी. मूसा और विनम्रता और संख्या का लेखकत्व। 12:3 [6:04-13:14]

अब, एक श्लोक है जिसे मैंने यहां छोड़ दिया है, और मैं इसे उठाना चाहता हूं। मैंने अध्याय 12 श्लोक 3 को छोड़ दिया, इस श्लोक का उपयोग यह दिखाने के लिए किया जाता है कि मूसा ने पेंटाटेच नहीं लिखा था। मूसा इस श्लोक को अध्याय 12 श्लोक 3 में नहीं लिख सकता था। इसमें कहा गया है कि मूसा, हारून और मरियम के बीच इस संघर्ष के बीच आपको यह कथन मिलता है। अब यह कौन लिख रहा है, मैं सुझाव दे रहा हूं कि मूसा यह सब लिख रहा है और यहां बयान है। मूसा ने यह कैसे लिखा होगा? “अब मूसा बहुत विनम्र व्यक्ति था?” अब क्या मूसा यह लिख रहा है: “अब मूसा बहुत विनम्र व्यक्ति था”? क्या इसके बारे में आपको कोई बात खटकती है? लोगों को इस बात पर विवाद हुआ कि वे पूछते हैं: मूसा ने ऐसा कैसे लिखा? यह बहुत अहंकारपूर्ण बयान होगा? “अब मूसा बहुत नम्र व्यक्ति था।”

वैसे, नम्रता का स्वरूप क्या है और अभिमान का स्वरूप क्या है? क्या किसी और में गर्व देखना आसान है? क्या अपने आप में देखना लगभग असंभव है? किसी दूसरे के अंदर घमंड देखना बहुत आसान है, अपने अंदर देखना बहुत मुश्किल। इसका मतलब यह है कि यदि आप गर्व के साथ एक समस्या के रूप में निपट रहे हैं, तो क्या आप इसे स्वयं खोज लेंगे? शायद नहीं। आपको आपकी सहायता की क्या आवश्यकता है? अब यहाँ धार्मिक उत्तर है, पवित्र आत्मा और यह एक अच्छा उत्तर है। क्या आपको किसी मित्र की आवश्यकता है? क्या कोई दोस्त आपको बता पाएगा कि क्या आप घमंडी और अहंकारी हैं? क्या कोई मित्र इसे आपमें देख पाएगा?

एक बार मैंने अपनी पत्नी से प्रश्न पूछा। यह आखिरी बार है जब मैंने वह सवाल पूछा था, उसने मुझे सच बताया था। क्या वह मुझे जानती है? हाँ वह करती है। वह मूल रूप से, मैं सोच रही थी कि हमारे बीच यह प्यार भरा रिश्ता है, वह दयालु और सौम्य होगी। उसने बंदूकें और बाम दोनों निकाल लीं! आखिरी बार मैंने यह प्रश्न पूछा था। लेकिन मैं जो कह रहा हूं वह संभवतः सही है। क्या वह मुझमें अभिमान और अहंकार की रूपरेखा देख सकती है? उत्तर है, हाँ। तो मैं जो पूछ रहा हूं, क्या अच्छे दोस्तों को आपकी बातें सुनने के लिए आपके पास कान होने चाहिए? अभिमान और विनम्रता से सावधान रहें। अब मूसा यह कथन लिखता है। क्या एक विनम्र व्यक्ति के लिए यह

जानना संभव है कि वह विनम्र है? मुझे लगता है यह संभव है.

अब मुझे शेष श्लोक पढ़ने दीजिए: "मूसा एक अत्यंत विनम्र व्यक्ति था जो पृथ्वी पर किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक विनम्र था।" अब वह विनम्र है लेकिन पृथ्वी पर किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक विनम्र है। तुम्हें मेरे साथ मज़ाक करना होगा। क्या वह अहंकारपूर्ण बयान है? अब आप कहते हैं कि भगवान ने उसे इसे लिखने के लिए कहा था इसलिए उसने इसे लिख दिया। तो आप इस श्लोक के साथ कैसे काम करते हैं? कुछ लोग कहते हैं कि मूसा यह आयत कभी नहीं लिख सकता था। यह आयत मूसा की कलम से नहीं निकली है। मूसा की कलम से यह अजीब होगा. क्या यह संभव है कि यहोशू यहाँ यह लिख रहा है? वैसे क्या यहोशू व्यवस्थाविवरण की पुस्तक खत्म करने जा रहा है? व्यवस्थाविवरण के अंत में मूसा कहाँ है? वह मर चुका है। मुझे जो बताया गया है उसके अनुसार जब आप मर जाते हैं तो लिखना बहुत कठिन होता है। इसलिए मूसा ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का अंत नहीं लिखा। इसलिए यहोशू ने संभवतः व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का अंत लिखा। क्या यह संभव है कि जोशुआ ने इन आख्यानों का अध्ययन किया और कुछ बिंदुओं पर टिप्पणियाँ कीं? तो क्या यह बहुत संभव है कि यहोशू ने कहा होगा, "मूसा पृथ्वी पर सबसे विनम्र व्यक्ति था।" क्या यह संभव है कि यहोशू ने मूसा की ओर देखा होगा और मूसा उसका गुरु था। तो यह जोशुआ की ओर से बहुत संभावित बयान है। तो यह संभव है. वैसे, एनआईवी इसे केवल यह कहने के लिए कोष्ठक में रखता है कि यह जोशुआ या उसके जैसी किसी चीज़ का सम्मिलन हो सकता है।

इसे देखने का एक और तरीका यहां दिया गया है। क्या कोई विनम्र व्यक्ति यह लिख सकता है. हमने यह प्रश्न पहले भी पूछा है। क्या विनम्रता वास्तव में मुद्दा है? उस पर उसके भाई और बहन द्वारा हमला किया जा रहा है, क्या विनम्रता वास्तव में मुद्दा है? मुझे यकीन नहीं है कि विनम्रता वास्तव में मुद्दा है। इसका अनुवाद करने का एक और तरीका है. यह शब्द 'ओनी' है। इसका अनुवाद दूसरे तरीके से भी किया जा सकता है. इसका अनुवाद "विनम्र" नहीं, बल्कि यह किया जा सकता है कि मूसा अधिक "उत्पीड़ित" था। यहां जिस शब्द का अनुवाद "विनम्रता" किया गया है उसका अनुवाद "उत्पीड़ित" भी किया जा सकता है। मुझे इस कविता को अब इस तरह पढ़ने दीजिए जिसमें "विनम्रता" के बजाय "उत्पीड़ित" शब्द शामिल है। शब्द का कोई भी अर्थ हो सकता

है। "अब मूसा पृथ्वी पर किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक उत्पीड़ित व्यक्ति था।" क्या मूसा ने वह कथन लिखा होगा? हाँ।

मूसा कह रहा है, "इस्राएल के लोग मेरे मामले में हैं और मैं उन लोगों से तंग आ गया हूँ जो मुझसे भोजन और पानी मांग रहे हैं। लोग एक चीज़ हैं, अब मेरे भाई और बहन मेरे मामले में हैं और इसलिए अब मेरा अपना परिवार भी मेरे साथ ऐसा कर रहा है। इसलिए मूसा तब अधिक उत्पीड़ित महसूस कर रहा था। इसलिए यदि आप इसे "उत्पीड़ित" के अर्थ में लेते हैं तो यह मूसा पर फिट बैठता है और यह यहां के संदर्भ में वास्तव में अच्छी तरह से फिट बैठता है। इसलिए ईमानदारी से कहें तो मुझे वह अनुवाद पसंद आया। अब समस्या क्या है? आपका एनआईवी, आपका एनएसआरवी, आपका किंग जेम्स सभी कहते हैं "विनम्रता" और हिल्डेब्रांट कहते हैं "उत्पीड़न" कौन सा सही है? नहीं, वास्तव में, आपको एहसास है कि डॉ. विल्सन ने एनआईवी का हिस्सा था और विल्सन ने कभी गलती नहीं की। यह सिर्फ ईमानदार सच्चाई के बारे में है। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि मुझे पीछे हटना होगा। इसका अनुवाद "विनम्रता" हो सकता है। यह "उत्पीड़ित" हो सकता है इसलिए स्पष्ट रूप से मुझे लगता है कि यह "उत्पीड़ित" कहता है लेकिन मैं गलत भी हो सकता हूँ; अन्य सभी अनुवाद "विनम्रता" कहते हैं। इसलिए मुझे यहां थोड़ी विनम्रता रखनी होगी और खुद को "उत्पीड़ित" कहना होगा। मैं इसे लगभग 60-40 का विभाजन देता हूँ। मैं यह हठधर्मिता या कुछ भी नहीं कह रहा हूँ। मुझे लगता है कि यह शायद सही है लेकिन मैं गलत भी हो सकता हूँ। लेकिन मुझे यह पसंद है, क्योंकि मुझे लगता है कि यह संदर्भ पर बेहतर फिट बैठता है।

### **डी. जासूसों को वादा किए गए देश में भेजना** [13:15-14:14]

हम अध्याय 13 और 14 में प्रवेश कर रहे हैं, यह संख्या 12 के बाद है, मूसा पृथ्वी पर सबसे विनम्र व्यक्ति है। अध्याय 13 और 14 में मूसा देश में जासूस भेजने जा रहा है, और ये अध्याय 13 और 14 पुराने नियम में बहुत बड़े अध्याय हैं। यह बिल्कुल बहुत बड़ा है क्योंकि वे बाहर जा रहे हैं और वादा किए गए देश की जासूसी कर रहे हैं। स्मरण रखो, तुम लोग इस्राएल की भूमि हो। तुम लोग जॉर्डन, गलील का सागर, मृत सागर हो। आप लोग इजराइल हैं। आप लोग भूमध्य सागर हैं। वे कादेश नामक स्थान से जासूस भेज रहे हैं बरनिया। कादेश बार्निया यहाँ उत्तरी सिनाई रेगिस्तान में

है, और वे जासूसों को वादा किए गए देश में ठीक यहीं भेज रहे हैं जहाँ यह व्यक्ति अपनी गर्दन खुजा रहा है। वह हेब्रोन है। वे हेब्रोन तक आने वाले हैं और उन्हें ये अद्भुत अंगूर मिलने वाले हैं जो आज भी अच्छे हैं। वे वादा किए गए देश से इन अंगूरों को लेकर वापस आने वाले हैं।

### **ई. क्या ईश्वर अपना मन बदल सकता है? ईश्वर स्थिर है या गतिशील?** [14:15-18:43]

तो आइए वादे से हटकर इस जासूसी पर कुछ सवालों पर गौर करें। कुछ प्रश्न हैं जो मैं संख्या अध्याय 13 और 14 के पाठ से पूछना चाहता हूँ। पहला प्रश्न यह है कि क्या ईश्वर बदल सकता है? यदि ईश्वर पूर्ण है तो वह कैसे बदल सकता है? क्या ईश्वर स्थिर है या ईश्वर गतिशील है? गतिशील में परिवर्तन की भावना अधिक होगी, स्थिर में यह भावना अधिक होगी कि ईश्वर स्थिर है, वह बदल नहीं सकता। तो भगवान, क्या वह स्थिर है या गतिशील है? पाठ क्या कहता है? क्या उसके लिए सोचना या बातचीत करना संभव है? परिवर्तन के हिस्से के रूप में भगवान लोगों के साथ कैसे सोचते हैं या बातचीत करते हैं, यह तब होता है जब आप लोगों से बात करते हुए आगे-पीछे जाते हैं और आप बदल जाते हैं और आप बातचीत करते हैं। जो कभी नहीं बदलता उसके साथ रिश्ता कैसे संभव है?

क्या कभी नहीं बदलता? क्या आपका कभी किसी चट्टान से रिश्ता रहा है? क्या आपके पास कभी कोई पालतू चट्टान है? अब आप चट्टान से जितनी चाहें बात कर सकते हैं, आप उसे पाल सकते हैं, उसे कपड़े पहना सकते हैं और उसके साथ अच्छा व्यवहार कर सकते हैं लेकिन वह अभी भी चट्टान ही है। चट्टान कभी नहीं बदलती इसलिए काम पूरा करने के बाद आप कहते हैं, चट्टान अभी भी चट्टान ही है। जो चीज़ बदलती ही नहीं, उससे आपका रिश्ता कैसा ? यह एक समस्या है, है ना? मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि किसी भी फिल्म में अगर आदमी कभी नहीं बदलता है तो यह एक समस्या होगी। तो अब हम शुरू करें।

यदि वह गतिशील है, तो आप कहते हैं कि भगवान लोगों के साथ बातचीत करता है, यदि वह गतिशील है, तो वह किस अर्थ या क्षेत्र में गतिशील है। क्या सब कुछ पकड़ में आ गया है? मेरा मतलब है कि क्या ईश्वर सब कुछ बदल सकता है? मेरा मतलब है कि अगर वह एक सुबह उठता है और कहता है, " आप जानते हैं कि मैं जीवन भर अच्छा रहा हूँ।" आप जानते हैं कि अच्छा होना वास्तव में उबाऊ है, मैं एक रोमांचक दिन चाहता हूँ शायद मैं आज बुरा बनने की कोशिश करूँगा।

मैं आज बुरा होने वाला हूँ और कुछ उत्साहित हूँ।' यदि ईश्वर बुरा बनना चाहे तो क्या वह ऐसा कर सकता है? यह उन दार्शनिक प्रश्नों पर वापस जाता है, ईश्वर क्या नहीं कर सकता? क्या ईश्वर किसी चट्टान को इतना बड़ा बना सकता है कि वह उसे उठा न सके? आप अच्छी तरह से कहते हैं कि यह शानदार है कि वहाँ कोई भगवान नहीं होना चाहिए क्योंकि अगर भगवान एक चट्टान नहीं बना सकता है जो इतनी बड़ी है कि वह इसे उठा नहीं सकता है तो वह सर्वशक्तिमान नहीं होगा। क्या आप समझते हैं कि प्रश्न में अंतर्विरोध निहित है। तो यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न है कि मूलतः इसका मतलब क्या है। लेकिन क्या ईश्वर अपने बारे में सब कुछ बदल सकता है, या क्या ऐसी कुछ चीजें हैं जिन्हें ईश्वर अपने भीतर नहीं बदल सकता है और आप उसके साथ कैसे काम करते हैं? क्या ईश्वर अभी भी चुनाव का अनुभव करता है, क्या ईश्वर अभी भी चुनाव कर सकता है? और आप कहते हैं, "हिल्डेब्रांड्ट का अब भगवान के लिए क्या मतलब है।" हम समय के साथ इस चीज़ में हैं, लेकिन क्या ईश्वर अभी कोई विकल्प चुन सकता है या क्या ईश्वर ने दुनिया की स्थापना से पहले ही अपने सभी विकल्प चुन लिए थे? इसलिए अब वह बस ट्रकिंग कर रहा है, मैंने बहुत समय पहले ये विकल्प चुने थे इसलिए अब मैं बस यह, यह, यह और यह कर रहा हूँ। तो अब भगवान बस वही कर रहे हैं जो उन्होंने बहुत पहले चुना था। क्या ईश्वर अभी चुन सकता है, या सभी विकल्प पहले ही चुन लिए गए हैं? तो ये कुछ ऐसे सवाल हैं जो इसके साथ आते हैं।

### **एफ. जासूसों को भेजना** [18:44-21:45]

अब, यहाँ कहानी है संख्या अध्याय 13: भूमि में दिग्गज। क्या मूसा का देश में जासूस भेजना गलत था? किसी ने एक बार मुझसे कहा था कि मूसा ने देश में जासूस भेजकर गलती की थी क्योंकि उसे सिर्फ भगवान पर भरोसा करना चाहिए था और वहाँ जाकर जासूसों को भेजे बिना जमीन ले लेनी चाहिए थी। वह सही क्यों नहीं है? क्योंकि संख्या अध्याय 13 में यह कहा गया है, "प्रभु ने मूसा से कहा, 'कनान देश का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजो।'" मूसा को जासूसों को बाहर भेजने के लिए किसने कहा था? भगवान ने किया। तो मूसा गलत नहीं था, वैसे, क्या यहोशू जेरिको में जासूस भेजेगा? आप लोग उसे पहले ही पढ़ चुके हैं! यहोशू ने जासूस भेजे और फिर वे गए और यरीहो को ले गए। इसमें कुछ भी गलत नहीं है सिर्फ इसलिए कि कोई भगवान की सेवा करता है इसका मतलब यह नहीं है कि उसे गूंगा होना होगा। इसलिए आप जमीन पर जासूसी करने के लिए

जासूसों को भेजते हैं ताकि यह देख सकें कि आप क्षेत्र पर कब्ज़ा करने जा रहे हैं या नहीं। इसलिए परमेश्वर ने उनसे जासूसों को भेजने के लिए कहा।

जब जासूस बाहर गए तो उन्होंने क्या देखा? एक सुन्दर भूमि अध्याय 13 श्लोक 26 और वे पीछा करते हुए बाहर निकले और उन्होंने एक ऐसी भूमि देखी जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है। मुझे यह वाक्यांश बहुत पसंद है क्या आपने पहले कभी यह वाक्यांश सुना है "देश में दूध और शहद की धारा बहती है?" मुझे हमेशा इससे परेशानी होती है क्योंकि जब आप लोग दूध सुनते हैं, तो आप लोग सोचते हैं "गाय।" प्रश्न, रेगिस्तान में गायें कैसे रहती हैं? जब दूध के बारे में बात हो रही है तो क्या यह गाय के दूध के बारे में बात हो रही है? नहीं, आपके पास रेगिस्तान में किस तरह के जानवर हैं? बकरियाँ। इसलिए जब दूध की बात हो रही है तो यह बकरी के दूध की बात हो रही है, गाय के दूध की नहीं। जब शहद के बारे में बात हो रही है तो आप लोग वहां बैठकर अच्छे शहद के बारे में सोच रहे हैं जिसे आप जार से बाहर निकालते हैं, यह सब मीठा शहद है। बहुत से लोग सोचते हैं कि यह दूध बकरी का दूध है और यह शहद खजूर का जैम है। दूसरे शब्दों में, वे खजूर लेते हैं और उन्हें इस जैम में मिलाते हैं जो वास्तव में मीठा होता है। लेकिन समस्या यह है कि यदि आप अमेरिकियों से कहें कि वे "बकरी के दूध और खजूर के जैम" की वादा की गई भूमि पर जाएं, तो हर कोई कहेगा कि मैं वहां नहीं जाना चाहता। चलो यहीं रुकें और मैकडॉनल्ड्स चलें। लेकिन शायद यही सच है। यह "बकरी का दूध और खजूर का जैम" है। बाशान क्षेत्र के क्षेत्र में गायें ऊपर हैं।

### जी कदेश बरनिया [21:46-29:33]

दरअसल मुझे आपको कादेश के बारे में एक कहानी बतानी चाहिए बरनिया । एक बार मैं इज़राइल गया था और मैं *गेट लॉस्ट इन जेरूसलम नामक कार्यक्रम विकसित कर रहा था* । तो मेरा बेटा, जैक, और मैं इन तस्वीरों को शूट कर रहे थे और हम यहां दक्षिण में मिस्र के पास गए, और हम एक चेकपॉइंट तक पहुंचे जो मूल रूप से दूसरी तरफ मिस्र था और इस तरफ इज़राइल था। इज़रायली सैनिक आए और मैंने कहा कि हम इस सड़क पर चलना चाहते हैं। एक सड़क थी जो नीचे की ओर जाती थी और मैं इस सड़क से नीचे जाना चाहता था क्योंकि इस सड़क के नीचे 2000 फुट ऊंचा पहाड़ था जिस पर मैं चढ़ सकता था और कादेश की तस्वीर ले सकता था बरनिया । अब

कादेश क्यों है? बरनिया इतना महत्वपूर्ण? वहाँ एक झरना है और जब इस्राएली चालीस वर्ष तक जंगल में भटकते रहे, तो वे कहाँ भटकते रहे? कादेश बरनिया वहीं है। मैं इस पर्वत के ऊपर से इसकी एक तस्वीर ले सकता हूँ, भले ही यह मिस्र में हो, मैं इसकी लगभग 20 मील नीचे की तस्वीर ले सकता हूँ।

इसलिए हम चौकी तक पहुंचते हैं और वह आदमी कहता है: “अरे, मैं तुम्हें वहां अंदर नहीं जाने दे सकता क्योंकि या तो तुम्हारे साथ एक इजरायली सैनिक होना चाहिए या तुम्हारे पास बंदूक होनी चाहिए। हमारे पास बंदूक नहीं थी, इसलिए मैंने सोचा। बदबू आ रही है कि मैं अमेरिका से आया हूँ, यह आदमी मुझे वहां जाने नहीं दे रहा है। मैं जानता हूँ कि यह सड़क वहां तक जाती है। इसलिए मैं और मेरा बेटा लगभग आधा मील पीछे सड़क पर चलते हैं और मुझे यह गंदगी वाली सड़क किनारे की ओर जाती हुई दिखाई देती है, इसलिए मैंने मन में सोचा, “आप जानते हैं कि मैं शर्त लगा सकता हूँ कि गंदगी वाली सड़क उस चौकी के चारों ओर जाती है।” मैंने सोचा, “यह पागलपन है, मैं अमेरिका से नहीं आया, मैं यह करने जा रहा हूँ।” तो हम इस छोटी सी कार में बैठकर इस गंदगी भरी सड़क पर जा रहे हैं, आप जानते हैं कि हर जगह चट्टानें उछल रही हैं और क्या लगता है, यह ठीक उस चौकी के आसपास चली गई, जहां उन्होंने हमें कभी नहीं देखा था। तो हम इस एक लेन वाली सड़क पर वापस आते हैं। वहां दो लेन नहीं, एक लेन है। हम इसे लगभग 50 मील नीचे चलाते हैं, हम इस पहाड़ पर चढ़ते हैं और मुझे कादेश का शॉट मिला बरनिया। मैं समझ गया। अब, जैसे ही वे नीचे जा रहे थे, मिस्र के सैनिक अपनी हुमवीज़ पर आगे-पीछे गाड़ी चला रहे थे और उनके पास मशीनगनों थीं और मेरे बेटे मुझ पर चिल्ला रहे थे, पिताजी मारे जाने वाले थे, ये लोग वहीं हैं, वे हमें गोली मार सकते हैं। हम 50 गज से कम दूरी पर हैं। इसलिए वह इन लोगों पर गुस्सा कर रहा है लेकिन जाहिर है कि उन्होंने हमें गोली नहीं मारी। हम वहां पहुंचे तो हमें तस्वीरें मिलीं। इसलिए वह मुझे इन मशीनगनों और गोली खाने के बारे में परेशान कर रहा था। तो मैंने सोचा कि वह ऊंचाई से बेहद डरता है और मैं यह जानता हूँ और यह सड़क वस्तुतः आठ फीट चौड़ी है, यह पूरी सड़क है इसलिए हम इस पहाड़ पर जा रहे हैं और मैं इस जगह पर आया और मैंने देखा कि वहां कुछ सौ फुट की गिरावट है इसलिए मैं कार को उसके ठीक किनारे से ऊपर खींचें। मैं बाहर निकलता हूँ और कहता हूँ, “अरे, जैच, चलो एक तस्वीर लें। वह कार का दरवाज़ा

खोलता है और कार सीधे 400 फीट नीचे चली जाती है।" आपने कहा था कि आप अपने बच्चे के साथ ऐसा नहीं करेंगे? मैं वहां जाकर ऐसा कर चुका हूं। आप उसके चेहरे पर भय देख सकते हैं, वह सीधे नीचे देखता है। कोई रेलिंग नहीं थी।

लेकिन वह असली समस्या नहीं थी, वह सिर्फ मनोरंजन के लिए थी। अब, क्या होता है कि आप लगभग 150 मील नीचे ड्राइव करते हैं और अब असली समस्या क्या है, मैं बीयर शेवा के नीचे चेकपॉइंट तक आता हूं। अब दिक्कत क्या है। अब मैं चौकी के किस तरफ हूं? मैं सड़क से नीचे आता हूं और चौकी तक पहुंचता हूं लेकिन अब क्या समस्या है। मैं अतिचार न करने वाले क्षेत्र में हूं और मैं चौकी के गलत तरफ हूं और मैं ऊपर आ जाता हूं। तो जब आप पकड़े जाते हैं तो आप क्या करते हैं और मैंने सोचा, "हे आदमी, हम बहुत परेशान हैं, यह वास्तव में बुरा है क्योंकि अब हमें बाहर निकलना है लेकिन हम बाहर नहीं निकल सकते क्योंकि हम इस तरह के अतिक्रमण रहित क्षेत्र में हैं चीज़। तो तभी आप वास्तव में बेवकूफ अमेरिकी की भूमिका निभाते हैं। मैं बस एक मूर्ख अमेरिकी हूँ। तो मैं ऊपर उठता हूँ और कहता हूँ कि क्या किसी को पता है कि बीयर शेवा यहां कहां है? खैर, बीयर शेवा यहाँ है, जाहिर है मैं इस भूमि को अपने हाथ के पिछले हिस्से की तरह जानता हूँ। वह लड़का मेरी ओर देखता है, बीयर शेवा आपका क्या मतलब है? खैर, मैं कहता हूँ कि हमें भटक जाना चाहिए, हम बीयर शेवा तक पहुंचने का रास्ता नहीं खोज सकते। वह कहां है? मैं उसे कैसे ढूँढ़ूँ? और मैं हिब्रू भी समझता हूँ। क्या मैं उसे इन अन्य लोगों से हिब्रू में बात करते हुए सुन सकता हूँ? मैं उसकी हर बात समझ सकता हूँ। वह सोचता है कि मैं एक अमेरिकी हूँ। खैर, मैं उसे सुन सकता था कि उसने जो कहा वह बहुत अच्छा नहीं था। तो फिर यह सार्जेंट लड़का ऊपर आता है और कहता है, "ठीक है, मैं बीयर शेवा जा रहा हूँ, आप मेरे पीछे आ सकते हैं।" तो मैं कहता हूँ "ठीक है, धन्यवाद, धन्यवाद। इसलिए हमने उसका अनुसरण किया और उस झंझट से बाहर निकल आए, लेकिन वास्तव में वह बहुत मुश्किल था और वह बहुत मज़ेदार नहीं था।

इसलिये इस्राएली कादेश तक आये भूमि में बरनिया . वे इन सभी अंगूरों को यह कहते हुए वापस लाते हैं, "यहाँ भूमि का फल है, यह वह भूमि है जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।" लेकिन समस्या क्या है? उन्हें टिड्डी दृष्टि प्राप्त हुई है। वे कहते हैं कि मूल रूप से अध्याय 13 श्लोक 33 में कहा गया है, "हम इन अनाकीम और रपाई को टिड्डे की तरह लगते थे"। क्या आपको ये

दिग्गज याद हैं जो ज़मीन पर हैं? " अनाकीम और रपाई और हम अपनी दृष्टि में टिड्डे के समान प्रतीत होते हैं और हम उन्हें भी एक जैसे लगते हैं।" ये लोग इतने बड़े हैं कि ये हमें टिड्डे की तरह कुचल डालेंगे। हम वहां ऊपर नहीं जा सकते, वहां ऊपर दिग्गज लोग हैं। इसलिए वे मूलतः जमानत पर छूट जाते हैं।

इसके बाद भगवान के खिलाफ आरोप आता है। वैसे, जब 12 जासूस वहां गए, तो केवल दो कौन थे जिन्होंने जमानत नहीं ली? ये नाम महत्वपूर्ण हैं. कालेब और जोशुआ. क्या मूसा के घटनास्थल से चले जाने के बाद यहोशू मूसा की जगह लेगा। कालेब, क्या तुम लोगों ने जोशुआ की किताब में कालेब के बारे में कुछ पढ़ा? क्या आपको याद है कालेब को अपनी जमीन मिल गई, 40 से अधिक उम्र के अन्य सभी लोग मरने वाले हैं। कालेब, मैं उसे "डॉग मैन" कहता हूं कालेब का अर्थ है "कुत्ता।" क्या यह लड़का एक लड़ाकू है, और क्या आपको याद है कि बुढ़ापे में भी वह लगभग 75 वर्ष का है, वह कहता है, "मैं बाहर जा रहा हूं और जमीन ले लूंगा जैसे कि जब मैं एक बच्चा था और वह तब भी बाहर आता है जब वह एक बच्चा होता है बूढ़ा आदमी अपने क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर रहा है। वह अपनी जमीन के लिए लड़ने को तैयार हैं. तो वह वास्तव में एक प्रकार का साहसी व्यक्ति है। भगवान कालेब और यहोशू दोनों को आशीर्वाद देते हैं।

लेकिन लोग अध्याय 13 श्लोक 3 और 4 में परमेश्वर के विरुद्ध यह आरोप लगाते हैं, इसकी जाँच करें: "परमेश्वर हमें इस देश में केवल तलवार के घाट उतारने के लिए क्यों ला रहा है, हमारी पत्नियाँ और बच्चे लूट के रूप में ले लिए जाएंगे। क्या हमारे लिए मिस्र वापस जाना बेहतर नहीं होगा?" और उन्होंने एक दूसरे से कहा, " हमें एक नेता चुनना चाहिए और मिस्र वापस जाना चाहिए।" वैसे, क्या ईश्वर उन्हें इस प्रकार की सहायता देने के कारण उन पर क्रोधित हो जाता है? जब वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने के लिए तैयार होंगे तो वे उस देश में जाने के लिए उस पर भरोसा नहीं करेंगे। वे जमानत लेकर मिस्र वापस जाना चाहते हैं।

### **एच. इस्राएल को नष्ट करने का परमेश्वर का संकल्प** [29:34-32:01]

अब, भगवान की प्रतिक्रिया क्या है? यहोशू और कालेब साहसी, दूरदर्शी व्यक्ति थे, और वे कहते हैं कि हम वहाँ तक जा सकते हैं और हम इसे प्रभु की शक्ति से कर सकते हैं। उन्होंने इसे वोट दिया. तो क्या अल्पसंख्यक हमेशा गलत होता है? यहां आपको अल्पसंख्यक मिल गया है, दस

के मुकाबले दो, और अल्पसंख्यक सही था। उन्हें जमीन के अंदर चले जाना चाहिए था। यहोशू और कालेब को परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है।

लेकिन अब समस्या क्या है? क्या भगवान लोगों पर क्रोधित होते हैं? भगवान की प्रतिक्रिया, अध्याय 14 श्लोक 11: प्रभु ने मूसा से कहा कि ध्यान दो कि वह यह कैसे करता है। वह इसे अलंकारिक प्रश्नों में करता है। यहाँ भगवान अब आलंकारिक प्रश्नों के साथ आ रहे हैं। “ये लोग कब तक मेरे साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते रहेंगे? तमाम चमत्कारी संकेतों के बावजूद वे कब तक मुझ पर विश्वास करने से इनकार करते रहेंगे?”

यदि मैं ईश्वर को कोई चमत्कारी संकेत करते हुए देख पाता तो मैं जीवन भर ईश्वर पर विश्वास करता। क्या आपने कभी ऐसा सोचा है? यदि ईश्वर मेरे दिनों में कोई चमत्कार करेगा तो मैं जीवन भर विश्वास करूँगा। क्या इन लोगों ने भगवान को देखा? हाँ। क्या वे ईश्वर में विश्वास करते थे? नहीं, चमत्कारों के बावजूद भी लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं करते। उनके पास हर जगह चमत्कार थे, हर दिन मन्ना था, और चट्टान से पानी था, फिर भी वे अभी भी भगवान में विश्वास नहीं करते हैं। “कब तक वे मुझ पर विश्वास करने से इनकार करते रहेंगे, भले ही मैंने उनके बीच सभी चमत्कार दिखाए हों।”

तब परमेश्वर कहता है, “मैं उन पर विपत्ति डालूँगा, परन्तु मैं तुम्हें [मूसा] को उन से अधिक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बनाऊँगा।” मूसा कहते हैं, “हे भगवान, ये लोग मेरी पीठ में भी दर्द कर रहे हैं। इसे करें। भगवान इसके लिए जाओ और मुझे एक राष्ट्र बनाओ। यह बहुत बढ़िया विचार है भगवान. मुझे वह पसंद है!” नहीं गलत। मूसा क्या करता है? फिर मूसा ईश्वर से असहमत है, क्या ईश्वर कहता है कि वह राष्ट्र को नष्ट कर देगा? परमेश्वर कहते हैं, “मैं राष्ट्र को नष्ट करने जा रहा हूँ और मैं तुम्हें [मूसा] को उनसे भी महान राष्ट्र बनाने जा रहा हूँ।” पद 12 में भगवान यही कहते हैं। भगवान कहते हैं, “मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा, मैं उनसे भी महान राष्ट्र बनाऊँगा।” यह मोटे तौर पर उनके अविश्वास और ईश्वर को तुच्छ समझने का परिणाम था।

### I. मूसा ने ईश्वर से बहस की [32:02-35:05]

मूसा परमेश्वर से कैसे बहस करता है? परमेश्वर कहते हैं, “मैं उन्हें मिटा डालूँगा।” “मूसा ने यहोवा से कहा, ‘तब मिस्री लोग यह सुनेंगे कि तू अपनी शक्ति से उन लोगों को उनके बीच से

निकाल लाया है, और वे इस देश के निवासियों को इसके विषय में बताएंगे।" तो फिर मैं श्लोक 16 पर आता हूँ: "और मिस्रवासी कहेंगे कि यहोवा इन लोगों को उस देश में लाने में सक्षम नहीं था जिसके बारे में उसने शपथ खाकर उनसे वादा किया था, इसलिए उसने उन्हें जंगल में मार डाला।" तो, दूसरे शब्दों में, मूसा कह रहा है, "हे भगवान, आपकी प्रतिष्ठा दांव पर है, मिस्रवासी कहने जा रहे हैं, 'हे, भगवान उन्हें मिस्र से बहुत अच्छी तरह से बाहर लाए, लेकिन वह उन्हें वादा किए गए देश में नहीं ला सके इसलिए वह हेम को रेगिस्तान में मार डाला क्योंकि वह पर्याप्त मजबूत नहीं था।' तो भगवान, यदि आप उन्हें रेगिस्तान में मार देंगे तो मिस्रवासी यही निष्कर्ष निकालेंगे। आपकी प्रतिष्ठा यहाँ दाँव पर है।"

फिर मूसा अपने तर्क के दूसरे भाग में जारी है। वह कहते हैं, "जैसा कि आपने घोषणा की थी, अब प्रभु की शक्ति प्रदर्शित हो सकती है।" भगवान, आप शक्तिशाली हैं, आप मजबूत हैं, यह आपकी ताकत है भगवान: भगवान क्रोध करने में धीमे हैं, निष्ठावान प्रेम में प्रचुर हैं और पाप और विद्रोह को क्षमा करते हैं। अब यह कथन कहाँ से आता है, "परमेश्वर क्रोध करने में धीमा है, प्रेम से भरपूर है"? क्या किसी को याद है जब मूसा चट्टान की दरार में छिपा हुआ था, जिसके पास से भगवान गुजरे थे और यह कहा गया था कि भगवान क्रोध करने में धीमे हैं, प्रेम में प्रचुर हैं? मूसा यहाँ परमेश्वर को उद्धृत कर रहा है। तो आपको जो मिलता है वह यह है कि मूसा कह रहा है, "हे भगवान, आप अपने चरित्र के कारण उन्हें नष्ट नहीं कर सकते। आपका चरित्र ऐसा है जो क्रोध करने में धीमा है, प्रेम करने में दृढ़ है, आप क्षमाशील और प्रेम करने वाले ईश्वर हैं। आप अपने चरित्र और अपनी प्रतिष्ठा के कारण उन्हें नष्ट नहीं कर सकते।"

तो मूसा भगवान से प्रार्थना कर रहा है, और फिर क्या होता है? पद 20 में हम देखते हैं कि क्या होता है। परमेश्वर उन पर प्रहार नहीं करता। श्लोक 20 भगवान यह कहते हैं: "और प्रभु [याहवे] ने उत्तर दिया, "जैसा कि तुमने पूछा था, मैंने उन्हें माफ कर दिया है।" क्या प्रार्थना से फर्क पड़ता है? भगवान कहते हैं, और मुझे श्लोक को स्पष्ट रूप से पढ़ने दीजिए, "भगवान ने उत्तर दिया 'जैसा आपने पूछा था मैंने उन्हें माफ कर दिया है। तौभी मेरे जीवन की शपथ और यहोवा का तेज सारी पृथ्वी पर भर गया है, जो मनुष्य मेरी महिमा कहते हैं, और जो आश्चर्यकर्म मैंने मिस्र में दिखाए थे, उन में से एक भी भीतर न जाएगा।" तो इसका अर्थ यह है कि वे भटकते रहते हैं सभी वृद्ध लोगों

के मरने तक 40 वर्ष। जंगल में 40 साल और इसलिए जिसने भी मिस्र से बाहर आते देखा, उसे समझ नहीं आया। क्या अगली पीढ़ी यहोशू के साथ देश में जाएगी? अगली पीढ़ी चली जाती है, पुरानी पीढ़ी खत्म हो जाती है। क्या मूसा के कहने के अनुसार यहोवा ने उन्हें छोड़ दिया? हाँ।

### जे. क्षमा और परिणाम [35:06-36:25]

इससे क्षमा की प्रकृति के बारे में एक और प्रश्न उठता है? क्या यह संभव है कि माफ़ कर दिया जाए और फिर भी परिणाम भुगतने पड़ें? जब मैं छोटा था तो मैंने सोचा था कि आपने माफ़ कर दिया है और सभी परिणाम गायब हो जाएंगे ताकि आपको परिणाम भुगतने की जरूरत न पड़े। आप बस क्षमा के लिए प्रार्थना करते हैं और भगवान आपको जाने देते हैं। कोई परिणाम नहीं है। क्या मैंने आपको कभी उस समय के बारे में बताया जब मेरे भाई ने मेरी बांह में छुरा घोंपा था? अब सवाल यह है कि क्या मैंने अपने भाई को माफ़ कर दिया? हाँ, मैंने उसे माफ़ कर दिया। लेकिन क्या मेरी बांह पर अभी भी कोई निशान था? हाँ। तो दूसरे शब्दों में उसे माफ़ कर दिया गया लेकिन क्या फिर भी परिणाम हुए? यह वैसा ही है जैसे मैंने आपको अपने दोस्त एरिक के बारे में बताया था, एक शराबी आदमी है जो एक युवा व्यक्ति को मारता है। क्या माता-पिता के लिए उस शराबी को माफ़ करना संभव है जिसने उनके बेटे को मार डाला? यह संभव है। क्या बेटा अभी भी मर चुका है, क्या परिणाम अभी भी बाकी हैं? इसलिए मैं आपको बता रहा हूँ कि सावधान रहें, माफ़ी के परिणाम भी सामने आ सकते हैं और ये लोग ऐसे ही थे।

### के. क्या भगवान अपना मन बदल सकते हैं ? [36:24-37:35]

अब, मुझे वापस जाने दें और यहां कुछ अन्य चीजों पर चर्चा करने दें। मैं इस मुद्दे से निपटना चाहता हूँ: क्या भगवान ने अपना मन बदल दिया? आयत 12 में वह कहता है, "मैं उन्हें मार डालूँगा और तुम्हें एक बड़ी जाति बना दूँगा।" मूसा ने सात आयतों के लिए प्रार्थना की और फिर आयत 20 में भगवान कहते हैं, "जैसा तुमने माँगा था, मैंने उन्हें माफ़ कर दिया, मैं उन्हें मिटा नहीं दूँगा। मैं एक प्लेग भेजने और उन्हें नष्ट करने और तुम्हें एक राष्ट्र बनाने जा रहा था। अब मैं ऐसा नहीं करूँगा, मूसा। जैसा आपने पूछा, मैं उन्हें माफ़ कर दूँगा।" क्या यहाँ भगवान ने अपना मन बदल लिया? मेरा प्रश्न यह है कि क्या ईश्वर अपना मन बदल सकता है? मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि भगवान अपना मन बदल सकते हैं। आप संख्या 23 और 19 की तलाश कर रहे हैं। वैसे भी, क्या भगवान अपना मन

बदल सकते हैं और सुझाव यह है कि हां, भगवान ने यहां अपना मन बदल लिया है।

वैसे, क्या आप अपना मन बदल सकते हैं? क्या आप कुछ ऐसा कर सकते हैं जो भगवान नहीं कर सकते? आप कहते हैं, "ठीक है, मैं पाप कर सकता हूं और भगवान पाप नहीं कर सकते।" मैं सिर्फ किसी का मन बदलने की बात कर रहा हूं, सही या गलत की नहीं। यदि आप अपना मन बदल सकते हैं और भगवान अपना मन नहीं बदल सकते, तो क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ?

### **एल. प्रार्थना और भगवान का मन बदलना** [37:36-39:04]

क्या भगवान ने यहां अपना मन बदल लिया है, मैं उन्हें मिटा देने जा रहा हूँ, मूसा ने प्रार्थना की। यह आपको प्रार्थना के बारे में बहुत सी बातें बताता है, है ना? क्या प्रार्थना से फर्क पड़ता है? जब मैं छोटा था तो मुझे सिखाया गया था कि आप प्रार्थना इसलिए नहीं करते कि आप भगवान का मन बदल देंगे, आप प्रार्थना इसलिए करते हैं क्योंकि आप सिर्फ भगवान के प्रति आज्ञाकारी बनना चाहते हैं। तुम प्रार्थना करो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें प्रार्थना करने की आज्ञा दी है। क्या मूसा यहाँ इसलिए प्रार्थना कर रहा है क्योंकि परमेश्वर ने उसे प्रार्थना करने की आज्ञा दी है, या क्या मूसा इसलिए प्रार्थना कर रहा है क्योंकि वह कुछ बदलाव लाना चाहता है? क्या मूसा इस मुद्दे पर ईश्वर का मन बदलना चाहता है? हाँ वह करता है। इसलिए वह भगवान से विनती करता है, "भगवान, आप ऐसा नहीं कर सकते" और वह भगवान से विनती करता है। तो मैं कह रहा हूँ, क्या प्रार्थना से कोई फर्क पड़ता है? मैं कहना चाहता हूँ कि मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की, और 8 छंदों के बाद ईश्वर कहते हैं, "ठीक है, मैं ऐसा नहीं करूंगा, जैसा आपने पूछा, मैं उन्हें माफ कर दूंगा।" मैं आपको यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि प्रार्थना बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। क्या आपको एहसास है कि प्रार्थना में हम ब्रह्मांड के ईश्वर को संबोधित कर सकते हैं? ब्रह्मांड के भगवान, "सैमुअल" का अर्थ है "भगवान सुनता है।" ईमानदारी से कहूँ तो कई बार मैं बहुत उबाऊ व्यक्ति हूँ, कई बार मैं अपनी पत्नी को भी मेरी बात सुनने के लिए तैयार नहीं कर पाता। भगवान सुनता है, भगवान जिसने ब्रह्मांड बनाया वह सुनता है! इसके बाद वह जवाब देते हुए कहते हैं, "जैसा आपने पूछा, मैं उन्हें माफ कर दूंगा।" इससे यह बड़ी बहस सामने आती है।

### एम. एकाधिक सामान चुनने पर [39:05-41:26]

विद्यार्थी प्रश्न: तो हम क्या करने जा रहे हैं इसके बारे में अपना मन बदल लेते हैं इससे पहले कि यह एक गलती हो और हम इसे एक बेहतर विकल्प के रूप में बदलें। इसलिए भगवान ने अपना मन बदल लिया और फिर वह एक गलती थी, लेकिन भगवान कोई गलती नहीं कर सकते। तो वह अपना मन कैसे बदल सकता है. यदि ईश्वर पूर्ण है, तो ईश्वर अपना मन कैसे बदल सकता है क्योंकि ईश्वर निश्चित रूप से गलती करने में असमर्थ था?

हिल्डेब्रांड्ट बायोडाटा: मुझे इससे इस तरह निपटने दीजिए। मुझे लगता है कि आप उत्तम और अच्छे के बारे में एकवचन के रूप में सोच रहे हैं। यदि अच्छाई अनेक है तो क्या होगा? क्या आपने कभी अपना मन बदला है, इसलिए नहीं कि एक गलत था और एक सही था, बल्कि इसलिए कि वहां दो सामान थे और आप किसी एक को चुन सकते थे और आपने दूसरे के मुकाबले एक को चुना? या शायद इससे भी बेहतर नहीं, हो सकता है कि आपने इसे चुनने के लिए ही दूसरे को चुनने का फैसला किया हो? तो मैं जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि कई अच्छे विकल्प हो सकते हैं और भगवान उनमें से किसी एक को चुन सकते हैं। हो सकता है कि पूर्ण पूर्ण न हो, *लेकिन* हो सकता है कि वहां कई पूर्णताएं हों, जो भगवान को बिंदु ए से बिंदु बी तक पहुंचा सकती हैं। इसलिए मैं यहां यही सुझाव दे रहा हूं। हो सकता है कि भविष्य एकल न हो, लेकिन हो सकता है कि भविष्य में संभावनाओं की दृष्टि से संभावनाएं हों, और अनेक संभावनाएं हों। दूसरे शब्दों में, क्या ईश्वर अपना उद्देश्य पूरा कर सकता है, और क्या वह उस उद्देश्य को अनेक माध्यमों से पूरा कर सकता है? और यदि आप उन संभावनाओं की अनुमति देते हैं, तो क्या यह मानव स्वतंत्रता की अनुमति देता है, और क्या यह भगवान को मनुष्यों के साथ बातचीत करने की भी अनुमति देता है, तो जहां तक भविष्य को आकार देने की बात है?

### एन. ईश्वर अपरिवर्तनीय है [41:27-46:23]

अब, हन्ना, मैं चाहता हूं कि तुम संख्या 23:19 खींचो, क्या किसी ने मलाकी किया? वह एक कविता पढ़ने जा रही है, वह यहां मेरा खंडन करने जा रही है। ठीक है, मैं स्वयं का खंडन करूंगा, यहां, संख्याओं में रहते हुए अपनी बाइबिल में अध्याय 23:19 को देखें। हम मलाकी जा सकते हैं और उसी प्रकार का काम कर सकते हैं। गिनती अध्याय 23 श्लोक 19 में यह कहा गया है कि

"परमेश्वर मनुष्य नहीं है, कि झूठ बोले, और न मनुष्य का पुत्र है, कि अपना मन बदल दे।" तो ऐसा लगता है कि जो मैंने अभी कहा, उसका खंडन करता है, है ना? वह ईश्वर अपना मन नहीं बदल सकता क्योंकि वह मनुष्य नहीं है।

तो शायद इस बात में अंतर है कि भगवान अपना मन कैसे बदलते हैं और मनुष्य अपना मन कैसे बदलते हैं। यहां सुझाव यह है कि हम अपने दिमाग को किसी गलत चीज़ से बदलकर कुछ बेहतर चीज़ की ओर मोड़ें। क्या यह संभव है कि ईश्वर अनेक वस्तुओं के बीच अपना मन बदल ले और फिर संभावना खुल जाए? अब, भगवान कब नहीं बदल सकते? जब भगवान ने हमें अपना वादा दिया है तो वह बदल नहीं सकते। जब उसने कुछ वादा किया है, तो क्या भगवान को अपना वादा निभाना होगा? इसलिए जब उससे कुछ वादा किया जाता है तो वह अपना मन नहीं बदल सकता।

हर बार जब भगवान अपना मुंह खोलते हैं तो क्या यह हमेशा एक वादा होता है? हर बार जब आप अपना मुंह खोलते हैं तो क्या यह एक वादा है? अब वैसे, क्या आप वादे कर सकते हैं? हां, लेकिन आपके जीवन का कितना हिस्सा वादे हैं? वैसे, क्या आपके जीवन के कुछ वादे हैं? हां, लेकिन क्या आप अक्सर दूसरे तरीकों से और हर तरह के अलग-अलग तरीकों से बात करते हैं। तो मैं यहां जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि यह अनुच्छेद यह कह रहा है कि जब भगवान हमें अपना वचन देते हैं, तो वह अपना वचन नहीं बदल सकते क्योंकि उन्होंने एक वादा किया है। उसने इब्राहीम से कहा, मैं तुम्हें भूमि, बीज और आशीर्वाद देने जा रहा हूं, इसलिए भगवान इसे बदल नहीं सकते। हालाँकि, परमेश्वर इब्राहीम को भूमि, बीज और आशीष कैसे देता है, उसका "कैसे" परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले सभी प्रकार के विभिन्न तरीकों में बदल सकता है। यीशु का जन्म बेथलहम में होना है। मीका अध्याय 5 श्लोक 2 कहता है कि मसीहा का जन्म यहूदिया के बेथलेहेम में होगा। जब मरियम और यूसुफ आए तो क्या यह संभव है कि वे सामरिया से होकर गए होंगे या पलिशती मैदान से होकर गए होंगे? क्या ऐसे कई रास्ते हैं जिनसे वे बेथलहम पहुँच सकते थे? परमेश्वर जो कह रहा है वह यह है कि, "नहीं, यीशु का जन्म बेथलहम में होगा।" आप वहां कैसे पहुंचते हैं यह मानवीय लचीलेपन और मानवीय पसंद की अनुमति देता है।

भगवान शाऊल के पास आते हैं, मुझे लगता है कि यह 1 शमूएल के अध्याय 13 में है, मुझे

लगता है कि यह 13:13 है, कुछ इस तरह, भगवान राजा शाऊल के पास आते हैं और वह कहते हैं, "शाऊल, अगर तुमने मेरी बात मानी होती तो मैं तुम्हारा बना देता यदि तुम ने मेरी बात मानी होती, तो उनके वंशज इस्राएल पर सर्वदा राजा होते रहेंगे।" मैं यहां जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि मुझे इसे दार्शनिक शब्दों में इस तरह रखना चाहिए। क्या ईश्वर कोई if कथन कर सकता है? अगर तुम ये करोगे तो मैं ये करूंगा और अगर तुम वो करोगे तो मैं वो करूंगा। क्या ईश्वर सशर्त, यदि-तो-कर सकता है? क्या उसके पास एकाधिक if- thens हो सकते हैं ? यदि वे ऐसा करते हैं तो मैं यह करूंगा आदि। शाऊल के मामले में यह अंश वह कहता है, "शाऊल यदि तुम होते तो मैं तुम्हारे वंशजों को इस्राएल पर हमेशा के लिए राजा बना देता, लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया इसलिए मैं उसके बाद एक आदमी की तलाश करने जा रहा हूं।" मेरा अपना हृदय, "--जो डेविड है। तो वहां भगवान के पास निश्चित रूप से दो रास्ते थे, शाऊल ने चुनाव किया और फिर भगवान ने जवाब दिया और डेविड राजा बन गया। तो हाँ, 1 शमूएल का वह अंश महान है, अध्याय 21 में कीला शहर पर एक और महान अंश है, जब हम वहाँ पहुँचेंगे तो मैं वहाँ जाऊँगा। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि भगवान के साथ सशर्तता है, सब कुछ भगवान के साथ तय नहीं है। अब, वैसे, क्या कुछ चीजें ईश्वर के साथ तय हैं? कुछ चीजें ऐसी हैं जो निश्चित हैं और कुछ ऐसी भी हैं जो निश्चित नहीं हैं। अब क्या यह बहुलता की अनुमति देता है और क्या यह मानव स्वतंत्रता की अनुमति देता है?

### **O. भगवान के रहस्य और आश्चर्य पर चिंतन** [46:24-56:35]

अब , आप कहते हैं, "हिल्डेब्रांट क्या आप कह रहे हैं कि आपने स्वतंत्र इच्छा बनाम पूर्वनियति समस्या का समाधान कर लिया है? और जवाब नहीं है। सच तो यह है कि मैं आपको भ्रमित करने का प्रयास कर रहा हूँ। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि यह संभव है कि ईश्वर के पास चुनने के लिए कई सिद्धियाँ हों। क्योंकि मैं सोचता हूँ कि ईश्वर काफी बड़ा है; मुझे वास्तव में इसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर सशर्तताओं से कैसे निपट सकता है। मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह पवित्रशास्त्र का हवाला दे रहा है, भगवान ने शाऊल को एक "यदि" दिया, और शाऊल से कहा "यदि तुमने मेरी बात मानी होती, तो मैं तुम्हें हमेशा के लिए राजा बना देता।" भगवान स्वयं ऐसा कहते हैं, इसलिए अब मैं अनेक सिद्धियों के अपने अनुमान से निपट नहीं रहा हूँ, मैं बाइबिल में जो कहता है उससे निपट रहा हूँ। यदि शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया

होता, तो वह सदैव के लिए राजा होता, परन्तु चूँकि अब उसकी स्थिति दाऊद जैसी नहीं थी। इसलिए भगवान स्वयं सशर्त कथनों का उपयोग करते हैं।

वैसे, मैं कहूँगा कि सशर्तता ईडन गार्डन तक भी जाती है। बगीचे में एक पेड़ है, “अगर तुम खाओगे तो मत खाओ, तुम्हारे लिए अच्छा है।” यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके लिए बुरा होगा और आप यहां से चले जाएंगे।” तो मैं शुरू से ही सोचता हूँ कि यह इफ-स्टेटमेंट इंसानों के साथ है और मेरा अनुमान है कि इफ-स्टेटमेंट हमारे पिता से आता है जो चुनाव भी करते हैं।

अब, क्या इस मुद्दे पर असहमत होना हमेशा ठीक है? वैसे, मैं किसी को समझाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, मैं मूल रूप से आपको भ्रमित करने की कोशिश कर रहा हूँ। क्या यह संभव है कि एक प्रोफेसर छात्रों को भ्रमित करके उन्हें ईश्वर से दूर करने का प्रयास कर सकता है और बाइबल में भ्रांतियाँ दिखा सकता है और सभी नकारात्मक चीजें दिखा सकता है और छात्रों को धर्म को तोड़ने के लिए भ्रमित कर सकता है। क्या मैं इसके साथ यही करने का प्रयास कर रहा हूँ, और उत्तर है: नहीं। मैं आपको भ्रमित करने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन मैं आपको इसलिए भ्रमित करने की कोशिश कर रहा हूँ क्योंकि आप यह सोचने से आगे बढ़ें कि आप कुछ ऐसा जानते हैं जिसे आप नहीं जानते हैं, यह कहने की ओर बढ़ें कि ईश्वर अद्भुत है - कि ईश्वर आश्चर्य से भरा है। आश्चर्य की बात यह है कि मैं आपको समझ नहीं पा रहा हूँ और मैं यहां से बाहर हूँ। क्या इसे करने का कोई और तरीका वैसा ही होगा जैसा मैं अपनी पत्नी के साथ करूँगा। हमारी शादी को 36 साल से अधिक हो गए हैं। क्या मैं अपनी पत्नी को समझता हूँ?--नहीं! और इसलिए मैं इस महिला के दिमाग में आता हूँ और मैं कहता हूँ कि मुझे समझ में नहीं आ रहा है, 36 वर्षों के बाद आप सोचेंगे कि मुझे अब तक कोई सुराग मिल गया होगा। अब अगर मैं आपको नहीं समझता और मैं बच जाता हूँ तो यह एक कदम है। क्या यह कहने का एक और कदम है कि आप अद्भुत हैं, मैं आपको नहीं समझता, कृपया आपको समझने में मेरी मदद करें? क्या यह प्यार में पड़े किसी व्यक्ति के प्रति एक आंदोलन है? मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि ईश्वर अद्भुत है और वह आश्चर्य कि भ्रम हमें उसकी ओर आकर्षित करता है, कहने का तात्पर्य यह है कि मैं अन्वेषण करना चाहता हूँ, मैं ईश्वर के बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ। मैं यह देखने के लिए उसके विचारों का पता लगाना चाहता हूँ कि भगवान कैसे चलते हैं, यह देखना चाहता हूँ कि भगवान को क्या पसंद है, उसे क्या पसंद है और

क्या नापसंद है और वह चीजों के बारे में कैसे सोचता है। वह आश्चर्य, हमें उसके प्रति समर्पण और अनुसरण की ओर आकर्षित करता है। आश्चर्य हमें ईश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। भ्रम की बजाय रहस्य हमें आकर्षित करता है।

लेकिन होता यह है कि अगर हम सोचें कि हम ईश्वर के बारे में जानते हैं तो फिर क्या? यदि हम सोचते हैं कि हम जानते हैं तो क्या हम अनुसरण करते हैं? नहीं, क्योंकि तब हम जो जानते हैं उससे संतुष्ट होते हैं। हम सहज महसूस करते हैं। जब मैं छोटा था तो मैं एक पद पर था और मैं इन धर्मग्रंथों को पढ़ता रहता था जहां भगवान बहुत गतिशील हैं। इसलिए मैं गतिशीलता की ओर अधिक बढ़ गया, लेकिन मेरे बहुत से सबसे अच्छे दोस्त वास्तव में चीजों के पूर्वनियति पक्ष में हैं और मैं इस तरह के ग्रंथों के कारण पिछले कुछ वर्षों में इससे दूर चला गया हूँ।

अब, वैसे, यदि आप चीजों के बारे में मेरे सोचने के तरीके या चीजों के बारे में सोचने के अन्य तरीकों से बाहर निकलना चाहते हैं तो आप कह सकते हैं कि भगवान को समय से पहले पता था कि मूसा प्रार्थना करने जा रहा था। वह समय से पहले जानता था कि मूसा प्रार्थना करने जा रहा है, इसलिए पूरी बात यह थी कि वह कहता है, "मूसा मैं उन्हें मिटा देने जा रहा हूँ" क्योंकि वह चाहता था कि मूसा लोगों के लिए खड़ा हो। वह जानता था कि मूसा ऐसा करेगा, और वह जानता था कि वह उन्हें मिटा नहीं पाएगा। इसलिए वह इसे मूसा के विकास के लिए अधिक कर रहा था। क्या हर कोई इसे देखता है? तो यहाँ परमेश्वर बस यही कर रहा है ताकि मूसा एक बेहतर इंसान बन जाए। क्या इनमें से कुछ यहां पाठ में है या हमने इसे यूँ ही बना दिया है? इनमें से कुछ भी पाठ में नहीं है। वह अनुमान है।

अब, इसके साथ काम करने का दूसरा तरीका यह है कि हम मनुष्य के रूप में ईश्वर को नहीं समझ सकते हैं। इसलिए भगवान स्वयं को एक इंसान की तरह चित्रित करते हैं। वह खुद को एक इंसान की तरह चित्रित करता है ताकि हम उसे समझ सकें। तो ऐसा लगता है कि भगवान ने अपना मन बदल लिया है, हालाँकि उसने वास्तव में अपना मन कभी नहीं बदला है। ईश्वर स्वयं को मानवरूप में चित्रित कर रहा है। ईश्वर स्वयं को मानवीय संदर्भ में रखता है ताकि हम उसे समझ सकें। इसका उपयोग इस प्रकार के अंशों के लिए भी किया जाता है, वे कहते हैं कि ईश्वर हमें इसे देखने का मानवीय तरीका बता रहा है, लेकिन वास्तव में ईश्वर ऐसा नहीं है। लेकिन फिर भी मैं

वास्तव में इसे नहीं खरीदता क्योंकि क्या हम भगवान की छवि में बने हैं, क्या हम भगवान के बारे में बहुत कुछ समझ सकते हैं?

यह सब कहने के बाद , मुझे इस पूरी चर्चा में अपने पसंदीदा अंश पर जाने दें और मुझे लगता है कि यह यशायाह अध्याय 40 श्लोक 28 में है। यशायाह अध्याय 40 बाइबल में सबसे अविश्वसनीय अध्यायों में से एक है, और यशायाह अध्याय 40 में वह यह कहता है . “क्या तुम नहीं जानते, क्या तुम ने नहीं सुना, यहोवा पृथ्वी की छोर तक का सृजनहार सनातन परमेश्वर है। वह थकेगा या थकेगा नहीं।” सुंदर कविता, है ना? और फिर यह कहता है: "और उसकी समझ का कोई पता नहीं लगा सकता।" यह मुझे बताता है कि क्या हम कभी इस बात का पता लगा पाएंगे? और जवाब नहीं है। यह उन सत्रों के लिए वास्तव में बहुत अच्छा काम करता है जो आधी रात तक अलग-अलग पृष्ठभूमि के अलग-अलग लोगों के साथ चर्चा करते हैं लेकिन भगवान कहते हैं, "कोई भी मेरी समझ को नहीं समझ सकता है।" हम ईश्वर के बारे में बहुत कुछ समझ सकते हैं। क्या हम कह सकते हैं कि हम ईश्वर के बारे में कुछ नहीं समझते? हम ऐसा नहीं कह सकते क्योंकि उन्होंने स्वयं को अपने वचन में प्रकट किया है, लेकिन हम ईश्वर के बारे में पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं। हम अपने विचारों से ईश्वर को नहीं घेर सकते। क्या हम इस बात से सहज हो सकते हैं कि हम अपने मन में ईश्वर के बारे में कैसे सोचते हैं? तब हमारा मन मूर्ति बन जाता है । दूसरे शब्दों में, हमारे दिमाग में बक्से हैं जिनमें हम भगवान को रखते हैं। मैं जो करना चाहता हूं वह यह कहने के लिए उन बक्सों को उड़ा देना है: ईश्वर ही ईश्वर है। इससे रहस्य और आश्चर्य पैदा होना चाहिए जो आपको जीवन भर उसका पीछा करने के लिए आकर्षित करता है।

मूसा की विनम्रता जैसे कुछ विरोधाभास अनुवाद की समस्याएँ हैं और ईमानदारी से कहूँ तो उनमें से कुछ बहुत आसान हैं क्योंकि आप इसे आसानी से समझ लेते हैं। अन्य विरोधाभास तार्किक विरोधाभास जैसी चीजें होंगी जिन पर आप काम कर सकते हैं, विभिन्न प्रकार के समाधान होंगे। उनमें से कुछ सांस्कृतिक या भाषाई अंतर होंगे और जिनके साथ हम काम कर सकते हैं। पवित्रशास्त्र में पूर्वनियति बनाम स्वतंत्र इच्छा जैसी अन्य बड़ी बातें हैं जिन पर हम अड़े हुए हैं। मुझे लगता है कि उस बिंदु पर आप आश्चर्य और रहस्य की ओर बढ़ते हैं। एक निश्चित अर्थ में, आपको अपनी मानवता में यह महसूस करना होगा कि हम सीमित हैं और ईश्वर अनंत है। अब वैसे क्या

परिमित अनंत में से कुछ को समझ सकता है? हां , हम अनंत में से कुछ का मानचित्रण कर सकते हैं लेकिन अनंत के कुछ हिस्से भी होंगे जिनके बारे में आपको कोई जानकारी नहीं है लेकिन यह वास्तव में आपके आस-पास मौजूद अनंत का हिस्सा है। इसलिए कुछ बिंदुओं पर यह कहने के लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है कि उनकी समझ अथाह है। इससे मुझे उसका और अधिक पीछा करने की प्रेरणा मिलती है, हार मानने की नहीं। यह मुझे ईश्वर का और अधिक अनुसरण करने की ओर प्रेरित करता है। उसे समाहित करने या उसे विस्तृत रूप से समझने के लिए उसका पीछा नहीं कर रहे हैं, बल्कि ईश्वर के चमत्कारों का पता लगाने के लिए उसका पीछा कर रहे हैं।

### पी. कोरह विद्रोह [56:36-62:01]

ओह , आइए इस कोरह विद्रोह से निपटें। संख्याओं की पुस्तक में अध्याय 16 कोरह का विद्रोह है। आइए मैं इसे कुछ हद तक समझाऊं और इसके माध्यम से बात करूं। अध्याय 16 में कोरह , दातान और अबीराम लेवी हैं जो मूसा के पास आते हैं और कहते हैं, “मूसा, तुम और हारून इतने आकर्षक नहीं हो। हम भी लेवी हैं। हम भगवान के लिए भी खास बनना चाहते हैं।” जब मैं विशेष कहता हूं तो मन में क्या आता है? आपको क्या लगता है कि आप भगवान के लिए इतने खास हैं? और इसलिए मूल रूप से यह विशेष और अलग होने की मांग है। इसलिए कोरह मूसा के पास आता है और कहता है, "अरे, हम नेता के रूप में आपके पास मौजूद कुछ अधिकार चाहते हैं।" तो यह इस तरह से नीचे चला जाता है। इस कथा में मूसा कुछ ऐसा करता है जो वह शायद ही कहीं और करता है। आम तौर पर जब लोग मूसा के पास आते हैं तो भगवान अंदर आते हैं और भगवान यह कहते हुए क्रोधित हो जाते हैं, "मैं उन्हें मिटा देने जा रहा हूं" और चीजें। यहाँ, मूसा स्वयं लोगों पर क्रोधित होता है और अध्याय 16 श्लोक 15 में: "तब मूसा बहुत क्रोधित हुआ और उसने यहोवा से कहा, 'उनकी भेंट स्वीकार न कर।'" मूसा लोगों के लिए प्रार्थना कर रहा है या लोगों के विरुद्ध? वह कह रहा है, " उनकी भेंट स्वीकार मत करो ।" तो यहाँ मूसा एक नई भूमिका ले रहा है, यह भूमिका है मध्यस्थ विरोधी की। आम तौर पर, मूसा ईश्वर और उसके लोगों के बीच मध्यस्थ है, लेकिन इस मामले में वह मध्यस्थ विरोधी है, वह कह रहा है, "भगवान उनके प्रसाद या बलिदान को स्वीकार नहीं करते हैं।"

क्या भगवान के पास हास्य की भावना है ? खैर यह एक प्रकार का व्यंग्यात्मक हास्य है। भगवान

कोरह के पास आते हैं और कहते हैं, “तुम अलग और विशेष बनना चाहते हो? ठीक है, अपने सभी लोगों को यहां अलग कर दो।” भगवान कहते हैं, “और फिर मैं तुम्हें अलग कर दूंगा।” मैं तुम्हें हमेशा के लिए अलग कर दूंगा।” ज़मीन खुलती है और उन सभी को कब्र में निगल जाती है। तो भगवान कहते हैं, “तुम अलग होना चाहते हो? मैं तुम्हें अलग कर दूंगा।” यह कुछ-कुछ मरियम की तरह है, “क्या तुम श्वेत बनना चाहती हो मरियम? ठीक है, मैं तुम्हें पूरी तरह गोरा बना दूंगा।” यहाँ, तुम अलग होना चाहते हो, ठीक है मैं तुम्हें अलग कर दूंगा।” ज़मीन खुल जाती है और उन सभी को निगल जाती है और कोरह गड्ढे में चला जाता है।

इसका संबंध नेताओं और लोगों के बीच सत्ता संघर्ष से है, जब आपके पास एक नेता होता है तो क्या नेता के अधीन लोग कभी-कभी नेता को कमजोर कर देंगे? वे नेता पर हर तरह के बुरे इरादे थोपते हैं। अनुच्छेद जिस चीज़ के विरुद्ध चेतावनी देता है वह यह है कि मूसा नेता है और जब ये लोग कहने आते हैं, “मूसा हमें नहीं लगता कि तुम इतने आकर्षक हो; हम आपके सभी विशेषाधिकार पाना चाहते हैं।” परमेश्वर कहते हैं, “नहीं, मूसा मेरा आदमी है। वह नेता हैं।” इसलिए आपको नेताओं को कमजोर करने और खराब बयान और चीजें देने के बारे में सावधान रहना होगा और यह अनुच्छेद उन अनुच्छेदों में से एक है।

मोसेस मध्यस्थ के बजाय विरोधी-मध्यस्थ के रूप में इस नई भूमिका को अपनाते हैं। संख्याओं की पूरी किताब में उसने लोगों की ओर से प्रार्थना करते हुए मध्यस्थता की है। मध्यस्थ की भूमिका वास्तव में महत्वपूर्ण है. क्या तुम लोगों ने कभी किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना की है जहाँ यह वास्तव में मायने रखता हो? मेरे चार बच्चे हैं और मैंने अपने बच्चों के लिए प्रार्थना की और मैं अपने बच्चों के लिए केवल एक प्रार्थना करता हूँ। यह हमेशा से ऐसा ही रहा है, “मैं शुरू से ही भगवान से कहता हूँ कि मैं एक प्रार्थना करता हूँ, मैं एक बहुत ही सरल व्यक्ति हूँ। यह बिल्कुल ठीक है भगवान, यह हर दिन एक ही प्रार्थना है: मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बच्चे बड़े होकर पूरे दिल से भगवान से प्यार करें। मुझे लगता है कि अगर वे भगवान को पूरे दिल से प्यार करते हैं तो बाकी जिंदगी का ख्याल खुद-ब-खुद हो जाता है। तो मैंने कहा, “हे भगवान, मैं चाहता हूँ कि मेरे बच्चे आपसे प्यार करें।” अब मैं झूठ बोल रहा हूँ. पिछले साल ठीक इसी समय मेरा बेटा अफगानिस्तान में था और उसने कहा कि जब भी वे बाहर जाते थे तो उन पर गोली चलाई जाती थी। उसके ऐसे

दोस्त थे जो इतने चकनाचूर हो गए थे कि उसे उनमें से कुछ हिस्सों को उठाना पड़ा। लेकिन फिर भी वह कहता है कि उसे उम्मीद है कि वह भूल सकता है और वह इसे कभी याद नहीं रखना चाहता। उन्होंने जो चीजें देखीं, उन्होंने कहा, "किसी भी इंसान को कभी नहीं देखना चाहिए, मैंने चीजें देखी हैं।" और यह सचमुच बहुत बुरा था। मैंने पिछले वर्ष इसी समय भगवान से प्रार्थना की थी कि वह बड़ा होकर भगवान से प्रेम करे लेकिन मैंने कहा, "हे भगवान, मुझे एक और चीज़ मिल गई है। मेरे बेटे, मैं नहीं चाहता कि उसकी हत्या हो। आप जानते हैं कि यह ऐसा है जैसे बूढ़े आदमी को पहले जाना चाहिए और फिर बच्चे को। तो कृपया भगवान बच्चे को बख्श दें।" प्रश्न: क्या मैंने प्रार्थना की कि ईश्वर उसकी जान बख्श दे या क्या मैंने ईश्वर से उसकी जान बख्शने की प्रार्थना की? मैंने माँगा। मैंने माँगा। मैं आपको बस इतना बताना चाहता हूँ कि मैंने पिछले साल प्रार्थना के बारे में बहुत कुछ सीखा। वैसे, क्या भगवान ने उसकी जान बख्श दी? भगवान ने किया। उसका सिर पूरी तरह खराब हो गया, लेकिन भगवान ने उसकी जान बचा ली। हम हर रात बस बातें करते हैं। हम घंटों-घंटों तक बात करते हैं और बहुत सी चीजों पर काम करते हैं, जिससे वह अभी भी परेशान है। लेकिन फिर भी मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि क्या प्रार्थना से चीजें बदल जाती हैं?

### **प्र. मूसा नबी और शीओल के रूप में** [62:02-66:14]

अब मूसा, यह आदमी एक भविष्यवक्ता है, वह एक अल्पकालिक भविष्यवाणी करता है। अल्पकालिक भविष्यवाणियाँ और दीर्घकालिक भविष्यवाणियाँ हैं। मूसा कहते हैं, " यदि मैं कोरह परमेश्वर का भविष्यवक्ता हूँ और तुम मुझ पर आक्रमण कर रहे हो, यदि मैं सच्चा भविष्यवक्ता हूँ तो भूमि खुल जाएगी और तुम्हें निगल जाएगी।" सोचो क्या होता है। क्या पैगम्बर का वचन पूरा होता है? हाँ। और यह कहता है कि मूलतः उन्हें निगल लिया जाता है। मूसा को एक सच्चा भविष्यवक्ता दिखाया गया है क्योंकि उसका वचन बिल्कुल उसी तरह सच होता है जैसा उसने कहा था। तो मूल रूप से ज़मीन खुल जाती है [संख्या 16:33] और उन्हें गड्ढे में निगल जाती है। जैसा कि एनआईवी इसका अनुवाद करता है, वे "कब्र" में जीवित चले गए। यह शब्द "कब्र" हिब्रू शब्द "शीओल" है। "शीओल" अंडरवर्ल्ड था, यह एक तरह का अस्पष्ट शब्द है। इसका मतलब "कब्र" हो सकता है। इसका मतलब भौतिक कब्र है, लेकिन इसका मतलब उससे परे की कब्र भी है, जैसे एक धुंधली

दुनिया, परछाइयों का साम्राज्य और उसके बाद का जीवन। यह एक जटिल शब्द है लेकिन यहां इसका मतलब सिर्फ जमीन को खोलना है, वे मर गए और वे कब्र में थे।

क्या यहूदी लोगों का नरक के बारे में हमसे अलग दृष्टिकोण था? यह जानना कठिन है कि नरक के बारे में उनका दृष्टिकोण क्या है क्योंकि मुझे लगता है कि समय के साथ नरक के बारे में उनका दृष्टिकोण भी बदल गया है। ऐसे दिनों में यह बहुत अस्पष्ट है। उन्हें मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं थी। आप जानते हैं कि मैं जो कह रहा हूं उसमें बहुत कुछ नहीं दिया गया है। आप लोगों ने अब पुराना नियम बहुत पढ़ा है, क्या स्वर्ग के बारे में बहुत चर्चा होती है? नरक के साथ भी यही बात है। यह वास्तव में कोई स्पष्ट बात नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु और नए नियम के समय तक उस स्थान के बारे में बहुत अधिक डेटा उपलब्ध था जहाँ आग जली थी। तो ऐसा प्रतीत होता है कि सदोम और अमोरा को जलाने और उस जैसी चीजों, जलने और पीड़ा देने के स्थानों और उस तरह की चीजों का पूर्वाभास है, लेकिन पुराने नियम में यह वास्तव में अस्पष्ट है। मोटे तौर पर यह शब्द " शीओल " पर आधारित है। कभी-कभी शब्द " शीओल " का सीधा सा अर्थ होता है कि वे उस व्यक्ति को कब्र में जमीन में गाड़ देते हैं और कभी-कभी इसका यह अधिक व्यापक अर्थ होता है। तो पुराने नियम में यह वास्तव में कठिन है। यदि मैं इसमें गलत नहीं हूँ तो आप वास्तव में यहूदी समझ का विकास देखते हैं और फिर ईसा के समय तक आते-आते यह अभी भी परिवर्तन की प्रक्रिया में है। तो यह सचमुच एक अच्छा प्रश्न है।

नरक को हम आम तौर पर ईश्वर से स्थायी अलगाव के रूप में देखते हैं, लेकिन इस शब्द "

शीओल " के साथ समस्या यह है कि कभी-कभी इसका मतलब केवल बाद का जीवन होता है और इसका मतलब सिर्फ स्वर्ग या नर्क नहीं होता है। इसलिए जब हम स्पष्ट भेद करते हैं तो इस समय यहूदी लोगों ने ऐसा नहीं किया। इसलिए मैं इसे एक तरह से अस्पष्ट छोड़ना चाहता हूँ क्योंकि सच्ची सच्चाई यह है कि उस समय ऐसा ही था।

शीओल " का अर्थ क्या निर्धारित करता है ? प्रसंग। कुछ संदर्भों में इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उन्हें बस कब्र में डाल दिया, इससे अधिक कुछ नहीं। अन्य यह अधर में लटका हुआ अर्थ क्षेत्र होगा जो अपरिभाषित पुनर्जन्म है।

**आर. क्या लोग बदल सकते हैं?** [66:15-71:32]

अब, कुछ लोग कभी नहीं सीखते। इन लोगों के निगल जाने के बाद, पद 41 में क्या होता है? यहाँ यह कहा गया है, " अगले दिन इस्राएल की सारी मण्डली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी, 'तुम ने यहोवा की प्रजा को मार डाला है,' उन्होंने कहा।" और क्या होता है, भगवान कहते हैं, "अरे, हम उन्हें भी भून देंगे।" और अब मूसा भूमिकाएँ बदलता है। वह कहते हैं, "भगवान ऐसा न करें।" मूल रूप से, ये लोग कभी नहीं सीखते हैं अब आप कहते हैं, आप जानते हैं, मैं एक युवा महिला हूँ और मैं इस लड़के से प्यार करती हूँ और उसे सभी प्रकार की समस्याएँ हैं। उसे सभी प्रकार की समस्याएँ हैं लेकिन मैं उसे ठीक करने में मदद कर सकता हूँ। हाँ, आपमें से कुछ लोग अपना सिर हिला रहे हैं क्योंकि आप ठीक-ठीक जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ: हाँ, ठीक है! प्रश्न, मैं बिल्कुल गंभीर हूँ: क्या किसी व्यक्ति में मूल स्तर पर परिवर्तन लगभग असंभव है? अब मैं एरिक के पास वापस आता हूँ जिसने सही कहा था: क्या पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति के मूल को बदल सकता है? हाँ। लेकिन क्या किसी व्यक्ति में मूल परिवर्तन वास्तव में कठिन है? क्या एक अच्छी महिला किसी पुरुष को बदल सकती है? मैंने भी ऐसा होते देखा है लेकिन क्या यह सचमुच दुर्लभ है। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि सावधान रहें। जब मेरी बेटियाँ या जवान औरतें मेरे पास आता है और कहता है, "मैं इस आदमी को बदलने जा रहा हूँ," मैं हमेशा "भोला" कहकर मुस्कुराता रहता हूँ। मैं कभी किसी को भोला नहीं कहूँगा लेकिन मैं निश्चित रूप से यह सोच रहा हूँ।

बदल रहा हूँ...मैं एक आदमी को जानता हूँ जिसका मैं एक और उदाहरण उपयोग करना चाहता हूँ। हम इसे बदल देंगे क्योंकि यह टेप पर है लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो धूम्रपान छोड़ना चाहता था। अब सवाल यह है कि क्या धूम्रपान करना बहुत साधारण बात है। आपका शरीर सिगरेट चाहता है और आप सिगरेट पीते हैं। अब क्या कोई शरीर बदल सकता है? प्रश्न: क्या वह धूम्रपान छोड़ सकता है?--नहीं। आप देख रहे हैं कि यह 50, 60 वर्षों तक चला, और मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि लोगों के लिए परिवर्तन वास्तव में कठिन है। क्या आप जानते हैं कि जिन लोगों की हृदय की बाईपास सर्जरी हुई है और वे जानते हैं कि उन्हें अपने खान-पान में बदलाव करना होगा और उन्हें व्यायाम करना शुरू करना होगा, क्या आप जानते हैं कि उन लोगों में से 90% लोगों की बड़ी ओपन हार्ट सर्जरी दो साल बाद होती है लोग वही कर रहे हैं जो वे पहले कर रहे थे। क्या लोग बदल सकते हैं? तुम जानते हो मैं क्या कह रहा हूँ? जब आप इसके बारे में सोचते

हैं तो यह डरावना होता है।

क्या अब आप लोग बदलाव के युग में हैं? आप बड़े हो रहे हैं और बहुत सी चीजें बदल रही हैं। क्या होता है, आप 25 वर्ष के हो जाते हैं और आप एक प्रकार से जीवाश्म बन जाते हैं? दरअसल, आप जो ईमानदार सच्चाई दिखाते हैं वह आपकी पूरी जिंदगी बदल देती है। तो यह दिलचस्प है कि आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ कि आप पलकें झपकाते हैं और आप लोगों की उम्र कितनी है 18-19 साल। आपका जीवन कितनी तेजी से बीत गया? आप फिर से पलकें झपकाते हैं और अचानक आप गॉर्डन कॉलेज से 25 वर्ष के हो जाएंगे और करियर में, फिर से पलकें झपकाते हैं और आपके 35 वर्ष के हो जाएंगे और आपके बच्चे होंगे। फिर अचानक आपकी पलकें फिर से झपकती हैं और आप रुक जाते हैं और फिर एक मिनट रुककर आप एक बार और झपकाते हैं और आप मेरे जैसे बूढ़े आदमी हैं! निष्कर्ष क्या है? क्या कोई उस देशी गीत को जानता है? निष्कर्ष है "पलकें मत झपकाना।" गाने का मतलब क्या है? क्या जीवन सचमुच तेजी से बीतता है? वह इसमें कैसे फिट बैठता है? जीवन सचमुच तेजी से बीत रहा है, क्या चीजें बदल सकती हैं? परिवर्तन के अभिकर्मक कौन हैं? क्या आप अपना भविष्य चुन सकते हैं और उसे आकार दे सकते हैं? क्या आप ऐसे विकल्प चुन सकते हैं जो भविष्य बदल दें?

जिस दुनिया में हम रहते हैं वह अविश्वसनीय है! इन बेवकूफ़ मैक कंप्यूटरों के कारण मुझे इसका उपयोग करने से उतना ही नफरत है, लेकिन स्टीव जॉब्स की मृत्यु हो गई। प्रश्न, क्या उन्होंने दुनिया में बड़े पैमाने पर बदलाव लाया? मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप में से कुछ लोग यहां ऐसे विकल्प चुनने में सक्षम होंगे जो दुनिया को बदल देंगे। *कार्पे डायम* - सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बनने के लिए अपना सर्वोत्तम विकल्प चुनें। दुनिया को अच्छे के लिए बदलो! क्या ऐसे लोग हैं जो दुनिया को बुराई के लिए बदलना चाहते हैं? आप लोगों को दर्शन मिल गया है. दैनिक चुनाव करें, क्या इसका मतलब यह है कि आपको तब उठना होगा जब 5:30 बजे उठें और अपना काम करें? नहीं, इसमें सोना आसान है। तुम अपना काम करो, तुम उसके पीछे लग जाओ। ऐसे विकल्प चुनें जो आपको उस तरह का व्यक्ति बना दें जो दुनिया को अच्छे के लिए बदल सकता है। हम आज एक अविश्वसनीय दिन में जी रहे हैं जिसमें आपके सामने सभी प्रकार के विकल्प हैं, यह एक स्मोर्गास्बोर्ड की तरह है और मैं आपको जो कह रहा हूँ वह है: इसके लिए जाओ। दुनिया में भलाई के लिए

बदलाव लाएँ। अपने आप को अच्छा करने के लिए प्रतिबद्ध रहें और फिर वे विकल्प चुनें। तो फिर भी, क्या लोग सचमुच बदल सकते हैं?

### एस. मूसा और चट्टान [71:33-77:12]

तो मूसा के चट्टान से टकराने के बारे में क्या, आप कहते हैं कि उसने भी इसे उड़ा दिया। मुझे लगता है कि बहुत से लोग मूसा के साथ अध्याय 20 को भूल जाते हैं। यहीं पर मूसा वास्तव में पाप करता है और भगवान इसके लिए उसे कीलों से ठोक देते हैं। लोग इसे हमेशा छोड़ देते हैं। अध्याय 20 कैसे शुरू होता है जहां मूसा चट्टान पर प्रहार करता है और वह पाप करता है और उसका न्याय किया जाता है, यह अध्याय कैसे शुरू होता है? “पहले महीने में इस्राएल की सारी मण्डली जिन मरुभूमि में पहुँची और वे कादेश में ठहरे। वहाँ मिरियम की मृत्यु हो गई और उसे दफनाया गया।” अध्याय सबसे पहले मरियम की मृत्यु से शुरू होता है। क्या मूसा के लिए यह बहुत बड़ी बात थी? जब मूसा टोकरी में तैर रहा था तो मरियम बड़ी बहन थी और उसने उसे प्रशिक्षित करने में मदद की। वह मर गई। वैसे, अध्याय 20 का अंत कैसे होता है? हारून की मौत की कहानी. तो अध्याय 20 के मध्य में मूसा है कि वह क्या करता है? वह चट्टान पर प्रहार करता है। क्या अध्याय 20 मूसा के लिए सचमुच एक बुरे दिन जैसा है? उसकी बहन मर जाती है, उसका भाई मर जाता है, और वह चट्टान से टकराता है। यदि मैं पेंटाटेच लिख रहा होता तो यही वह चीज़ है जिसे मैं छोड़ना चाहता।

यह मूसा है वह चट्टान के पास जाता है और भगवान उससे कहते हैं कि चट्टान से बात करो और पानी निकल आएगा। परमेश्वर ने केवल एक चट्टान से टकराने के कारण मूसा को इतनी ज़ोर से कीलें क्यों मारीं? परमेश्वर ने केवल चट्टान पर प्रहार करने के कारण मूसा को इतना कठोर दंड क्यों दिया? चट्टान से टकराने में क्या गलत है? क्या पानी पाने के लिए चट्टान पर छड़ी मारना स्वाभाविक रूप से गलत है? नहीं, तो मुझे बस इसे पूरा करने दीजिए। चट्टान से टकराने में क्या गलत था? चट्टान से टकराने में कुछ भी गलत नहीं था सिवाय इसके कि असली मुद्दे का चट्टान से टकराने से कोई लेना-देना नहीं है, असली मुद्दा पद 12 में पाया जाता है: "परन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, क्योंकि तुम ने मुझ पर पूरा भरोसा नहीं किया।" इस कारण तू इस्राएलियोंके साम्हने पवित्र जानकर इस मण्डली को उस देश में न ले जाना जिसे मैं उन्हें देता हूँ। मूसा उनके साथ 40

साल तक भटकने वाले हैं, मूसा भटकने वाले हैं यही मृत सागर क्षेत्र है। वह यहाँ और ठीक उस तरफ आने वाला है जहाँ एरिक है, मूसा जॉर्डन नदी को पार नहीं कर सकता। तो माउंट नीबो पर, यहाँ मूसा उस पहाड़ पर जाने वाला है जहाँ उसकी मृत्यु होने वाली है। वह पहाड़ को देखने, इज़राइल को देखने और देखने में सक्षम होने जा रहा है, लेकिन वह वहाँ नहीं जा सकता है। उसने चट्टान पर प्रहार किया है। क्यों? क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया। क्या भरोसा और आस्था बड़ी बात है? ईसाई धर्म यही सब कुछ है। यह बात है। इब्राहीम ने ईश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। इधर, मूसा को ईश्वर पर भरोसा नहीं था।

क्या ईश्वर किसी व्यक्ति के हृदय के विचारों और इरादों का न्याय करता है? हो सकता है कि आप उन विचारों और इरादों को परखने में सक्षम न हों लेकिन भगवान दिल के विचारों और इरादों को परखते हैं। मूसा का मन इधर ठीक न था। उसने शारीरिक रूप से जो किया वह ठीक था लेकिन उसका दिल सही नहीं था, उसका दिल भरोसा नहीं कर रहा था।

दूसरी समस्या नेताओं की जिम्मेदारी है। क्या नेताओं को आम लोगों की तुलना में अधिक गंभीरता से आंका जाता है? नेताओं का अधिक कठोरता से मूल्यांकन किया जाता है। मुझे हमेशा यह दुःस्वप्न आता है कि मैं मर गया हूँ और स्वर्ग चला गया हूँ और मेरे सभी छात्र यानी कि आप लोग आ रहे हैं और सेंट पीटर ने मुझे यह कहते हुए किनारे कर दिया कि आप स्वर्ग में नहीं जा सकते। मैं देख रहा हूँ और मेरे सभी छात्र स्वर्ग जा रहे हैं। वह कह रहा है, "हिल्डेब्रांट को वे सभी पागलपन भरी बातें याद हैं जो तुमने कक्षा में मेरे बारे में कही थीं कि मैं अपना मन नहीं बदल रहा हूँ? खैर, मैंने अपना इरादा बदल दिया है और अब यहीं बाहर रहूँगा। अपने सभी छात्रों को अंदर जाने दो। ताकि जब तुम लोग ट्रक में आ रहे हो तो तुम मेरी ओर हाथ हिलाकर देख सको। हो सकता है कि आप लोगों में से कोई मध्यस्थ की तरह हो और कहे, "कृपया, उसे अंदर आने दें।"

लेकिन सच तो यह है कि जब आप यहां हर समय बातें करते रहते हैं तो क्या मैं बहुत सी मूर्खतापूर्ण, पागलपन भरी बातें कहता हूँ। सच कहूँ तो, मुझे इसकी चिंता है। किसी दिन मुझे उन सभी मूर्खतापूर्ण बातों के लिए निर्णय मिलेगा जो मैंने कक्षा के सामने कही हैं। वैसे भी, जब आप नेतृत्व का पद लेते हैं तो क्या उच्च स्तर की जिम्मेदारी होती है और आपको इसके बारे में जागरूक होना होगा और सावधान रहना होगा। मूसा ने इसे उड़ा दिया।

फिर अंततः, क्या कार्यों के परिणाम होते हैं? क्या आपके कार्यों के परिणाम होते हैं? यह ज्ञान के बारे में मूलभूत बातों में से एक है, कार्यों के साथ परिणाम भी होते हैं। वास्तव में अच्छी बात यह है कि क्या कार्यों का कोई सकारात्मक परिणाम हो सकता है? क्या आप अच्छे काम कर सकते हैं और फिर अच्छे परिणाम पा सकते हैं? और नकारात्मक परिणाम अर्जित करने के लिए आप कुछ नकारात्मक चीजें कर सकते हैं। तो इसके परिणाम होंगे और यह हमें क्या बताता है? क्या आज का दिन मायने रखता है? जो काम आप आज करते हैं, क्या वे मायने रखते हैं? हाँ! आज का दिन मायने रखता है; जो चीजें आप करते हैं वे मायने रखती हैं। इससे फ़र्क पड़ता है। तो क्या जीवन इतना समृद्ध है कि प्रत्येक दिन को पकड़ो। हर दिन आपके द्वारा की जाने वाली चीजें मायने रखती हैं। मूसा के साथ, यदि वह उस दिन चूक गया होता जब उसने चट्टान पर प्रहार किया होता तो क्या होता? वह प्रतिज्ञा किये हुए देश में चला गया होगा। लेकिन उस दिन उन्होंने कुछ ग़लत निर्णय लिए और इसका असर उनके जीवन के अगले 40 वर्षों पर पड़ा!

### **टी. पोल पर सांप (संख्या 21) [77:13-79:44]**

संख्या अध्याय 21 में लोग फिर से शिकायत करते हैं। लोग फिर से शिकायत करते हैं और क्या होता है? भगवान जहरीले सांपों को बाहर भेजते हैं और सांप लोगों को काटना शुरू कर देते हैं। अब वह इससे बाहर कैसे निकले? वह एक कांसे के सांप को एक खंभे पर रखता है और उसे पकड़कर कहता है, "तुम्हें इस सांप को देखना होगा जिसने तुम्हें काटा है। तुम ध्रुव को देखो, तुम देखो और जीवित रहो।" क्या किसी को गाना याद है, "देखो और जियो मेरे भाई देखो और जियो" एक पुराना सुसमाचार भजन यह था "देखो और जियो।" लेकिन वास्तव में यही कारण नहीं है कि नए नियम में यह इतना महत्वपूर्ण है कि यीशु निकोडेमस से बात कर रहे हैं और यहां बताया गया है कि यह कैसे होता है। नए नियम में यीशु निकोडेमस से बात कर रहे हैं और वह कहते हैं कि जो स्वर्ग से नीचे आया था उसके अलावा कोई भी कभी स्वर्ग में नहीं गया था। स्वर्ग से कौन नीचे आया? मनुष्य का पुत्र। नीकुदेमुस, जैसे मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊंचे पर चढ़ाया जाना चाहिए, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्यों? "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" खम्भे पर वह साँप

हमें क्या बताता है? क्या इससे हमें पता चलता है कि ईश्वर हमसे कितना प्रेम करता है? खम्भे पर साँप , मनुष्य का पुत्र बन जाता है जो परमेश्वर का पुत्र है जो हमारी ओर से क्रूस पर चढ़ाया गया है। जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह नष्ट न होगा। खम्भे पर वह साँप यूहन्ना 3:16 की स्थापना है जहाँ यीशु अब कह रहे हैं कि मनुष्य के पुत्र को खम्भे पर चढ़ाया जाएगा, और जो कोई उस पर विश्वास करेगा - अनन्त जीवन। यह अविश्वसनीय है लेकिन भगवान हमसे प्यार करते हैं और हर दिन मायने रखता है। चलो यह करते हैं! ठीक है, कक्षा का अंत, आप लोगों से मुलाकात।

हेनरी हेगन द्वारा लिखित

टेड हिल्डेब्रांट 2 द्वारा रफ संपादित